

## सूरह हा मीम सज्दा - 41

سُورَةُ الْحَمْدِ

### सूरह हा मीम सज्दा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 54 आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम (हा, मीम सज्दा) है। क्योंकि इस का आरंभ अक्षर: (हा, मीम) से हुआ है। और आयत 37 में केवल अल्लाह ही को सज्दा करने का आदेश दिया गया है। और इस सूरह की तीसरी आयत में (फुस्सिलत) का शब्द आया है। इसलिये इस का दूसरा नाम (फुस्सिलत) भी है।
- इस के आरंभ में कुर्आन के पहचानने पर बल देते हुये सोच-विचार की दावत, तथा बह्वी और रिसालत को झुठलाने पर यातना की चेतावनी दी गई है। फिर अल्लाह के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 36 तक उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है जो अपने धर्म पर स्थित हैं। और उन्हें विरोधियों को क्षमा कर देने के निर्देश दिये गये हैं। फिर आयत 40 तक अल्लाह के अकेले पूज्य होने तथा मुर्दों को जीवित करने का सामर्थ्य रखने की निशानियाँ प्रस्तुत की गयी हैं।
- आयत 41 से 46 तक कुर्आन के साथ उस के विरोधियों के व्यवहार तथा उस के दुष्परिणाम को बताया गया है। फिर 51 तक शिर्क करने और प्रलय के इन्कार पर पकड़ की गयी है।
- अन्त में कुर्आन के विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये यह भविष्यवाणी की गई है कि जल्द ही कुर्आन के सच्च होने की निशानियाँ विश्व में सामने आ जायेंगी।

भाष्यकारों ने लिखा है कि जब मक्का में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी तो कुरैश के प्रमुखों ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास एक व्यक्ति उतबा पुत्र रबीआ को भेजा। उस ने आकर आप से कहा कि यदि आप इस नये आमंत्रण से धन चाहते हैं तो हम आप के लिये धन एकत्र कर देंगे। और यदि प्रमुख और बड़ा बनना चाहते हैं तो हम तुम्हें अपना प्रमुख बना लेंगे। और यदि किसी सुन्दरी से विवाह करना चाहते हों तो हम उस की भी व्यवस्था कर देंगे। और यदि आप पर भूत-प्रेत का प्रभाव हो तो हम उस का उपचार करा देंगे। उतबा की यह बातें सुन कर आप (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) ने यही सूरह उसे सुनायी जिस से प्रभावित हो कर वापिस आया। और कहा कि जो बात वह पेश करता है वह जादू-ज्योतिष और काव्य-कविता नहीं है। यह बातें सुन कर कुरैश के प्रमुखों ने कहा कि तू भी उस के जादू के प्रभाव में आ गया। उस ने कहा: मैं ने अपना विचार बता दिया अब तुम्हारे मन में जो भी आये वह करो। (सीरते इब्ने हिशाम- 1। 313, 314)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدٌ

1. हा, मीम।

2. अवतरित है अत्यंत कृपाशील  
दयावान् की ओर से।

تَنْزِيلٌ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

3. (यह ऐसी) पुस्तक है सविस्तार वर्णित  
की गई है जिस की आयतें। कुर्आन  
अर्बी (भाषा में) है उन के लिये जो  
ज्ञान रखते हों।<sup>[1]</sup>

كِتَابٌ فُصِّلَتْ آيَاتُهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

4. वह शुभसूचना देने तथा सचेत करने  
वाला है। फिर भी मुँह फेर लिया है  
उन में से अधिकतर ने, और सुन  
नहीं रहे हैं।

بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

5. तथा उन्होंने कहा:<sup>[2]</sup> हमारे दिल  
आवरण (पर्दे) में हैं उस से आप  
हमें जिस की ओर बुला रहे हैं। तथा  
हमारे कानों में बोझ है तथा हमारे  
और आप के बीच एक आड़ है।  
तो आप अपना काम करें और हम

وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِيْ أَكِنَّةٍ مِّمَّا نَدْعُوْنَا إِلَيْهِ وَفِيْ  
أَذَانِنَا وَقَدْ رُؤِئْنَا وَبَيْنَنَا وَبَيْنَكَ حَبَابٌ فَاغْلُ  
إِنَّا عَمُّونَ

1 अर्बी भाषा तथा शैली का।

2 अर्थात् मक्का के मुशरिकों ने कहा कि यह एकेश्वरवाद की बात हमें समझ में नहीं आती। इसलिये आप हमें हमारे धर्म पर ही रहने दें।



अपना काम कर रहे हैं।

6. आप कह दें कि मैं तो एक मनुष्य हूँ तुम्हारे जैसा। मेरी ओर वही की जा रही है कि तुम्हारा वंदनीय (पूज्य) केवल एक ही है। अतः सीधे ही जाओ उसी की ओर तथा क्षमा माँगो उस से। और विनाश है मुश्रिकों के लिये।
7. जो ज़कात नहीं देते तथा आखिरत को (भी) नहीं मानते।
8. निःसंदेह जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन्हीं के लिये अनन्त प्रतिफल है।
9. आप कहें कि क्या तुम उसे नकारते हो जिस ने पैदा किया धरती को दो दिन में, और बनाते हो उस के साझी? वही है सर्वलोक का पालनहार।
10. तथा बनाये उस (धरती) में पर्वत उस के ऊपर तथा बरकत रख दी उस में। और अंकन किया उस में उस के वासियों के आहारों का चार<sup>[1]</sup> दिनों में समान रूप<sup>[2]</sup> से प्रश्न करने वालों के लिये।
11. फिर आकर्षित हुआ आकाश की ओर तथा वह धुवाँ था। तो उसे तथा धरती को आदेश दिया कि तुम दोनों आ जाओ प्रसन्न होकर अथवा दबाव से। तो दोनों ने कहा हम प्रसन्न होकर आ गये।
12. तथा बना दिया उन को सात आकाश

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَتَمِّ الْأَهْكَمِ إِلَهُ  
وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوا  
وَوَيْلٌ لِلْمُشْرِكِينَ ۝

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ  
هُمْ كَافِرُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ  
عَظِيمٌ ۝

قُلْ إِنَّمَا لَكُمْ كُفْرُؤُنَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي  
يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا ذَٰلِكَ رَبُّ  
الْعَالَمِينَ ۝

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ  
فِيهَا أَثْوَانَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً  
لِّلنَّاسِ يَلِينَ ۝

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ  
لَهَا وَالْأَرْضِ انْقِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا  
قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ۝

فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَوَآتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأُوحِيَ فِي كُلِّ

1 अर्थात् धरती को पैदा करने और फैलाने के कुल चार दिन हुये।

2 अर्थात् धरती के सभी जीवों के आहार के संसाधन की व्यवस्था कर दी। और यह बात बता दी ताकि कोई प्रश्न करे तो उसे इस का ज्ञान करा दिया जाये।

दो दिन में। तथा वही कर दिया प्रत्येक आकाश में उस का आदेश। तथा हम ने सुसज्जित किया समीप (संसार) के आकाश को दीपों (तारों) से तथा सुरक्षा के<sup>[1]</sup> लिये। यह अति प्रभावशाली सर्वज्ञ की योजना है।

13. फिर भी यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें सावधान कर दिया कड़ी यातना से जो आद तथा समुद्र की कड़ी यातना जैसी होगी।

14. जब आये उन के पास उन के रसूल उन के आगे तथा उन के पीछे<sup>[2]</sup> से कि न इबादत (बंदना) करो अल्लाह के सिवा की। तो उन्होंने कहा: यदि हमारा पालनहार चाहता तो किसी फरिश्ते को उतार देता।<sup>[3]</sup> अतः तुम जिस बात के साथ भेजे गये हो हम उसे नहीं मानते।

15. रहे आद तो उन्होंने अभिमान किया धरती में अवैध। तथा कहा कि कौन हम से अधिक है बल में? क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिस ने उन को पैदा किया है उन से अधिक है बल में, तथा हमारी आयतों को नकारते रहे।

16. अन्ततः हम ने भेज दी उन पर प्रचण्ड वायु कुछ अशुभ दिनों में।

سَمَاءٍ أَرْفَأَ وَزَيْنًا السَّمَاءِ الدُّنْيَا بِصَابِغٍ وَحِفْظًا  
ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صُغْرَةً مِّثْلَ صُغْرَةِ  
عَادٍ وَثَمُودَ

إِذْ جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ  
خَلْفِهِمْ أَلَّا يَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ  
مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ

فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ  
وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي  
خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَكَانُوا بِآيَاتِنَا  
يَجْحَدُونَ

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ مَعْسُومَاتٍ

1 अर्थात् शैतानों से रक्षा के लिये। (देखिये: सूरह साफ़ात, आयत: 7 से 10 तक)।

2 अर्थात् प्रत्येक प्रकार से समझाते रहे।

3 वे मनुष्य को रसूल मानने के लिये तय्यार नहीं थे। (जिस प्रकार कुछ लोग जो रसूल को मानते हैं पर वे उन्हें मनुष्य मानने को तय्यार नहीं हैं)। (देखिये: सूरह अन्आम, आयत: 9-10, सूरह मुमिनून, आयत: 24)

ताकि चखायें उन्हें अपमानकारी यातना संसारिक जीवन में। और आखिरत (परलोक) की यातना अधिक अपमानकारी है। तथा उन्हें कोई सहायता नहीं दी जायेगी।

17. और रही समूद तो हम ने उन्हें मार्ग दिखाया फिर भी उन्होंने अंधे बने रहने को मार्ग दर्शन से प्रिय समझा। अन्ततः पकड़ लिया उन को अपमानकारी यातना की कड़क ने उस के कारण जो वह कर रहे थे।
18. तथा हम ने बचा लिया उन को जो ईमान लाये तथा (अवैज्ञा से) डरते रहे।
19. और जिस दिन अल्लाह के शत्रु नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे तो वह रोक लिये जायेंगे।
20. यहाँ तक की जब आजायेंगे उस (नरक) के पास तो साक्ष्य देंगे उन पर उन के कान तथा उन की आँखें और उन की खालें उस कर्म का जो वह किया करते थे।
21. और वे कहेंगे अपनी खालों से: क्यों साक्ष्य दिया तुम ने हमारे विरुद्ध? वह उत्तर देगी कि हमें बोलने की शक्ति प्रदान की है उस ने जिस ने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति दी है। तथा उसी ने तुम्हें पैदा किया प्रथम बार और उसी की ओर तुम सब फेरे जा रहे हो।

لَنُنَذِرُنَّهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا  
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ وَلَهُمْ لَا نَصْرُونَ ۝

وَأَمَّا شُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ  
فَأَخَذَتْهُمُ صِيعَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا  
يَكْسِبُونَ ۝

وَبَحَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ  
يُوزَعُونَ ۝

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ  
وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَقَالُوا الْجُلُودُ هِيَ أَلَمَ شَهِدَتْ عَلَيْنَا قَالُوا  
أَنطَقَتِ اللَّهُ الَّذِي أَنطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ  
خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَآلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝



22. तथा तुम (पाप करते समय)<sup>[1]</sup> छुपते नहीं थे कि कहीं साक्ष्य न दें तुम पर तुम्हारे कान तथा तुम्हारी आँख एवं तुम्हारी खालें। परन्तु तुम समझते रहे कि अल्लाह नहीं जानता उस में से अधिकतर बातों को जो तुम करते हो।
23. इसी कुविचार ने जो तुम ने किया अपने पालनहार के विषय में तुम्हें नाश कर दिया। और तुम विनाशों में हो गये।
24. तो यदि वे धैर्य रखें तब भी नरक ही उन का आवास है। और यदि वे क्षमा माँगें तब भी वे क्षमा नहीं किये जायेंगे।
25. और हम ने बना दिये उन के लिये ऐसे साथी जो शोभनीय बना रहे थे उन के लिये उन के अगले तथा पिछले दुष्कर्मों को। तथा सिद्ध हो गया उन पर अल्लाह (की यातना) का वचन उन समुदायों में जो गुजर गये इन से पूर्व जिन्हों तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षतिग्रस्त थे।
26. तथा काफ़िरों ने कहा<sup>[2]</sup> कि इस कुर्आन को न सुनो। और कोलाहल (शोर) करो उस (के सुनाने) के समय। सम्भवतः तुम प्रभुत्वशाली हो जाओ।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَعِزُّوْنَ اَنْ يُّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنْ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرَدَكُمْ فَاصْبَحْتُمْ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

فَاِنْ يَصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوٰى لَهُمْ ۚ اِنْ يَسْتَغِيْثُوْا فَمَا لَهُمْ مِنَ الْمُعْتَدِيْنَ ۝

وَقَيَضْنَا لَهُمْ قُرَآءًا فَزَيَّلُوْا ۚ وَهُمْ مَّٰبِيْنَ اِيْنْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِىْ اَمْرِ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِيْنِ وَالْاِنْسِ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝

- 1 आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि खाना कौबा के पास एक घर में दो कुरैशी तथा एक सकफ़ी अथवा दो सकफ़ी और एक कुरैशी थे। तो एक ने दूसरे से कहा कि तुम समझते हो कि अल्लाह हमारी बातें सुन रहा है? किसी ने कहा: यदि कुछ सुनता है तो सब कुछ सुनता है। उसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी: 4816, 4817, 7521)
- 2 मक्का के काफ़िरों ने जब देखा कि लोग कुर्आन सुन कर प्रभावित हो रहे हैं तो उन्होंने यह योजना बनायी।

27. तो हम अवश्य चखायेंगे उन को जो काफिर हो गये कड़ी यातना और अवश्य उन को कुफल देंगे उस दुष्कर्म का जो वे करते रहे।
28. यह अल्लाह के शत्रुओं का प्रतिकार नरक है। उन के लिये उस में स्थायी घर होंगे उस के बदले जो हमारी आयतों को नकार रहे हैं।
29. तथा वह कहेंगे जो काफिर हो गये कि हे हमारे पालनहार! हमें दिखा दे उन को जिन्होंने हमें कुपथ किया है जिन्नों तथा मनुष्यों में से। ताकि हम रोंद दें उन दोनों को अपने पैरों से। ताकि वह दोनों अधिक नीचे हो जायें।
30. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर इसी पर स्थित रह<sup>[1]</sup> गये तो उन पर फरिश्ते उतरते हैं<sup>[2]</sup> कि भय न करो, और न उदासीन रहो, तथा उस स्वर्ग से प्रसन्न हो जाओ जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।
31. हम तुम्हारे सहायक हैं संसारिक जीवन में तथा परलोक में, और तुम्हारे लिये उस (स्वर्ग) में वह चीज़ है जो तुम्हारा मन चाहे तथा उस में तुम्हारे लिये वह है जिस की तुम माँग करोगे।
32. अतिथि-सत्कार स्वरूप अति क्षमी दयावान् की ओर से।

فَلَنُذِيقَنَ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا  
وَلَنُجْزِيَنَّهُمْ أَثْوَابَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

ذَٰلِكَ جَزَاءُ عَدَاةِ اللَّهِ النَّارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا  
دَارُ الْخُلْدِ ۖ جَزَاءُ ۖ لِمَا كَانُوا يَآيِسُونَ  
يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرَنَا الَّذِينَ أَضَلْنَا  
مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنسِ نَجْعَلُهُم بِأَعْدَائِنَا  
إِذْ كُنَّا مِنَ الْآسِفِينَ ﴿٢٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَفْتَاؤُا مَا تَزُولُ  
عَلَيْهِمُ الْمَلَكَةُ الْآخِفَاءُ ۚ أُولَٰئِكَ نَجْزِيهِمْ  
بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾

نَحْنُ أَوْلَىٰ بِكُمُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَفِي الْآخِرَةِ  
وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهُ ۖ أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ ﴿٣١﴾

تُؤْتُونَ عَفْوَ ۚ رَحِيمٌ ﴿٣٢﴾

1 अर्थात् प्रत्येक दशा में आज्ञा पालन तथा एकेश्वरवाद पर स्थिर रहे।

2 उन के मरण के समय।



33. और किस की बात उस से अच्छी होगी जो अल्लाह की ओर बुलाये तथा सदाचार करे। और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ।

34. और समान नहीं होते पुण्य तथा पाप, आप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हो। तो सहसा आप के तथा जिस के बीच बैर हो मानो वह हार्दिक मित्र हो गया।<sup>[1]</sup>

35. और यह गुण उन्हीं को प्राप्त होता है जो सहन करें, तथा उन्हीं को होता है जो बड़े भाग्यशाली हों।

36. और यदि आप को शैतान की ओर से कोई संशय हो तो अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

37. तथा उस की निशानियों में से है रात्रि तथा दिवस तथा सूर्य तथा चन्द्रमा, तुम सज्दा न करो सूर्य तथा चन्द्रमा को। और सज्दा करो उस अल्लाह को जिस ने पैदा किया है उन को, यदि तुम उसी (अल्लाह) की इबादत (बंदना) करते हो।<sup>[2]</sup>

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

وَلَا تَسْتَوِ الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّذِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾

وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُو حِظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾

وَمَا يَنْزِعُ عَنْكَ مِنَ الشَّيْطَانِ تُرْجُومًا فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

وَمِنَ آيَاتِهِ آتِلُ وَالنَّهَارُ وَاللَّيْلُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾

1 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तथा आप के माध्यम से सर्वसाधारण मुसलमानों को यह निर्देश दिया गया है कि बुराई का बदला अच्छाई से तथा अपकार का बदला उपकार से दें। जिस का प्रभाव यह होगा कि अपना शत्रु भी हार्दिक मित्र बन जायेगा।

2 अर्थात् सच्चा बंदनीय (पूज्य) अल्लाह के सिवा कोई नहीं है। यह सूर्य, चन्द्रमा और अन्य आकाशीय ग्रहें अल्लाह के बनाये हुये हैं। और उसी के आधीन हैं। इसलिये इन को सज्दा करना व्यर्थ है। और जो ऐसा करता है वह अल्लाह के साथ उस की बनाई हुई चीज़ को उस का साझी बनाता है जो शिर्क और



38. तथा यदि वह अभिमान करें तो जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के पास हैं वह उस की पवित्रता का वर्णन करते रहते हैं रात्रि तथा दिवस में, और वह थकते नहीं हैं।
39. तथा उस की निशानियों में से है कि आप देखते हैं धरती को सहमी हुई। फिर जैसे ही हम ने उस पर जल बरसाया तो वह लहलहाने लगी तथा उभर गई। निश्चय जिस ने जीवित किया है उसे अवश्य वही जीवित करने वाला है मुर्दा को। वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।
40. जो टेढ़ निकालते हैं हमारी आयतों में वह हम पर छुपे नहीं रहते। तो क्या जो फेंक दिया जायेगा अग्नि में उत्तम है अथवा जो निर्भय हो कर आयेगा प्रलय के दिन? करो जो चाहो, वास्तव में वह जो तुम करते हो उसे देख रहा है।<sup>[1]</sup>
41. निश्चय जिन्होंने कुफ़्र कर दिया इस शिक्षा (कुर्आन) के साथ जब आ गई उन के पास। और सच्च यह है कि यह एक अति सम्मानित पुस्तक है।

فَإِنْ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ  
بِالنَّيْلِ وَاللَّهَامِ وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا  
عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْزَلَتْ وَرَبَّتْ ۚ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُجِي  
الْمَوْتِ ۚ إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۚ  
أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ  
الْقِيَامَةِ ۚ اعْلَمُوا مَا تَسْتَكْبِرُونَ ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ  
وَلَهُمْ لَكُتُبٌ عَزِيزَةٌ ۝

अक्षम्य पाप तथा अन्याय है। सज्दा करना इबादत है। जो अल्लाह ही के लिये विशेष है। इसीलिये कहा है कि यदि अल्लाह ही की इबादत करते हो तो सज्दा भी उसी के लिये करो। उस के सिवा कोई ऐसा नहीं जिसे सज्दा करना उचित हो। क्योंकि सब अल्लाह के बनाये हुये हैं सूर्य हो या कोई मनुष्य। सज्दा आदर के लिये हो या इबादत (वंदना) के लिये। अल्लाह के सिवा किसी को भी सज्दा करना अवैध तथा शिर्क है जिस का परिणाम सदैव के लिये नर्क है। आयत 38 पूरी कर के सज्दा करें।

- 1 अर्थात् तुम्हारे मनमानी करने का कुफल तुम्हें अवश्य देगा।

42. नहीं आ सकता झूठ इस के आगे  
से और न इस के पीछे से। उतरा है  
तत्त्वज्ञ प्रशंसित (अल्लाह) की ओर से।
43. आप से वही कहा जा रहा है जो आप  
से पूर्व रसूलों से कहा गया।<sup>[1]</sup> वास्तव  
में आप का पालनहार क्षमा करने  
(तथा) दुःखदायी यातना देने वाला है।
44. और यदि हम इसे बनाते अर्बी (के  
अतिरिक्त किसी) अन्य भाषा में तो  
वह अवश्य कहते कि क्यों नहीं खोल  
दी गई उस की आयतें? यह क्या  
कि (पुस्तक) ग़ैर अर्बी और (नबी)  
अर्बी? आप कह दें कि वह उन के  
लिये जो ईमान लाये मार्गदर्शन तथा  
आरोग्यकर है। और जो ईमान न  
लायें उन के कानों में बोझ है और  
वह उन पर अंधापन है। और वही  
पुकारे जा रहे हैं दूर स्थान से।<sup>[2]</sup>
45. तथा हम प्रदान कर चुके हैं मूसा को  
पुस्तक (तौरात)। तो उस में भी विभेद  
किया गया, और यदि एक बात पहले  
ही से निर्धारित न होती<sup>[3]</sup> आप के  
पालनहार की ओर से, तो निर्णय कर  
दिया जाता उन के बीच। निःसंदेह वह  
उस के विषय में संदेह में डॉवाडोल है।

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ  
تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝

مَا يَقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قَبِلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ  
إِنْ رَبُّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ۝

وَلَوْ جَمَلْنَاهُ قُرْآنًا فَتَجَمَّيْنَا قَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ  
آيَاتُهُ أَءَعْجَبِي وَعَرَبِي قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا  
هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي أَذَانِهِمْ  
وَقُرْءَانُهُمْ عَلَيْهِمْ عَمًى أُولَٰئِكَ يَنْزَلُونَ مِنْ مَّكَانٍ  
بَعِيدٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ  
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُتِنَ  
بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۝

1 अर्थात् उनको जादूगर झूठा तथा कवि इत्यादि कहा गया। (देखिये: सूरह, ज़ारियात आयत: 52, 53)

2 अर्थात् कुंआन से प्रभावित होने के लिये ईमान आवश्यक है इस के बिना इस का कोई प्रभाव नहीं होता।

3 अर्थात् प्रलय के दिन निर्णय करने की। तो संसार ही में निर्णय कर दिया जाता और उन्हें कोई अवसर नहीं दिया जाता। (देखिये: सूरह फ़ातिर, आयत: 45)



46. जो सदाचार करेगा तो वह अपने ही लाभ के लिये करेगा। और जो दुराचार करेगा तो उस का दुष्परिणाम उसी पर होगा। और आप का पालनहार तनिक भी अत्याचार करने वाला नहीं है भक्तों पर।<sup>[1]</sup>

47. उसी की ओर फेरा जाता है प्रलय का ज्ञान। तथा नहीं निकलते कोई फल अपने गाभों से और नहीं गर्भ धारण करती कोई मादा, और न जन्म देती है, परन्तु उस के ज्ञान से। और जिस दिन वह पुकारेगा उन को कि कहाँ है मेरे साझी? तो वह कहेंगे कि हम ने तुझे बता दिया था कि हम में से कोई उस का गवाह नहीं है।

48. और खो जायेंगे<sup>[2]</sup> उन से वे जिन्हें पुकारते थे इस से पूर्वा तथा वह विश्वास कर लेंगे कि नहीं है उन के लिये कोई शरण का स्थान।

49. नहीं थकता मनुष्य भलाई (सुख) की प्रार्थना से और यदि उसे पहुँच जाये बुराई (दुख) तो (हताश) निराश<sup>[3]</sup> हो जाता है।

50. और यदि हम उसे<sup>[4]</sup> चखा दें अपनी

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا  
وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

إِلَيْهِ يُرْدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ  
ثَمَرَاتٍ مِّنَ الْأُمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ  
وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ  
شُرَكَاءُ نِي قَالُوا الذَّلِيلُ مَا مِنَّا مِنْ شَيْءٍ ۝

وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ وَطَوَّأُوا  
لَهُمْ مِنْ حَيْثُ يَخْبُونَ ۝

لَا يَسْتَعِزُّ الْإِنْسَانُ مِن دُعَاءِ الْغَيْرِ وَإِنَّ مَتَّهَ التُّرُ  
قِيَنُوسَ قَمُوطٌ ۝

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِنَّا مِن بَعْدِ صَرَآءِ مَسْتَه

1 अर्थात किसी को बिना पाप के यातना नहीं देता।

2 अर्थात सब गैब की बातें अल्लाह ही जानता है। इसलिये इस की चिन्ता न करो कि प्रलय कब आयेगी। अपने परिणाम की चिन्ता करो।

3 यह साधारण लोगों की दशा है। अन्यथा मुसलमान निराश नहीं होता।

4 आयत का भावार्थ यह है कि काफिर की यह दशा होती है। उसे अल्लाह के यहाँ जाने का विश्वास नहीं होता। फिर यदि प्रलय का होना मान लें तो भी इसी

दया दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कह देता है कि मैं तो इस के योग्य ही था। और मैं नहीं समझता कि प्रलय होनी है। और यदि मैं पुनः अपने पालनहार की ओर गया तो निश्चय ही मेरे लिये उस के पास भलाई होगी। तो हम अवश्य अवगत कर देंगे काफ़िरो को उन के कर्मों से तथा उन्हें अवश्य घोर यातना चखायेंगे।

51. तथा जब हम उपकार करते हैं मनुष्य पर तो वह विमुख हो जाता है तथा अकड़ जाता है। और जब उसे दुःख पहुँचे तो लम्बी-चौड़ी प्रार्थना करने लगता है।

52. आप कह दें: भला तुम यह तो बताओ कि यदि यह (कुर्आन) अल्लाह की ओर से हो फिर तुम कुफ़र कर जाओ उस के साथ, तो कौन उस से अधिक कुपथ होगा जो उस के विरोध में दूर तक चला जाये?

53. हम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर। यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सच्च है।<sup>[1]</sup> और क्या

لَيَقُولَنَّ هَذَا إِلَىٰ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۖ  
وَلَئِنْ رُجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَإِخْسَافٌ  
فَلَنُتِمِّنَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُمْ  
مِنْ عَذَابٍ عَلِيمٍ ۝

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأِجِنِيهِ ۖ  
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَوَدَّ عَلَاءَ غَرِيبٍ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ  
بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝

سَرَّيْنَهُمَا يَبْتَغِي الْآفَاقَ وَيَأْتِي الْفُتُوحَ حَتَّىٰ  
يَبْكِيَنَّ لَهُمْ إِنَّهُ الْحَقُّ ۖ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ  
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

कुविचार में मग्न रहता है कि यदि अल्लाह ने मुझे संसार में सुख-सुविधा दी है तो वहाँ भी अवश्य देगा। और यह नहीं समझता कि यहाँ उसे जो कुछ दिया गया है वह परीक्षा के लिये दिया गया है। और प्रलय के दिन कर्मों के आधार पर प्रतिकार दिया जायेगा।

1 कुर्आन, और निशानियों से अभिप्राय वह विजय है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा आप के पश्चात् मुसलमानों को प्राप्त होंगी। जिन से उन्हें



यह बात पर्याप्त नहीं कि आप का पालनहार ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी (गवाह) है?

54. सावधान! वही संदेह में हैं अपने पालनहार से मिलने के विषय से। सावधान! वही (अल्लाह) प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है।

أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ رَبِّهِمْ  
أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّخِيطٌ ۝

विश्वास हो जायेगा कि कुर्आन ही सत्य है। इस आयत का एक दूसरा भावार्थ यह भी लिया गया है कि अल्लाह इस विश्व में तथा स्वयं तुम्हारे भीतर ऐसी निशानियाँ दिखायेगा। और यह निशानियाँ निरन्तर वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा सामने आ रही हैं। और प्रलय तक आती रहेंगी जिन से कुर्आन पाक का सत्य होना सिद्ध होता रहेगा।